Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

कबीर के पदों में ईश्वर भक्ति और नैतिकता

Dr. Asha Tiwari Ojha*

Associate Professor, Department of Hindi, Sunderwati Mahila College, Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bihar

सार – ***संत कबीर का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ था परंतु फिर भी उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों को मिटाने के लिए जीवन के अंतिम क्षणों तक प्रयत्न किया। संत कबीर समाज में फैले आडंबर और अंधविश्वास को मिटाने के लिए दोहे और पद की रचना करते थे जिनका सीधा उद्देश्य कुरीतियों पर वार करना था।***

उनके दोहे और साथिया आज के युग में भी समान तरीके से लाभदायक है। क्योंकि आज भी समाज में बहुत से आडंबर और अंधविश्वास फैले हैं जिन्हें मिटाना बहुत जरूरी है। आपको हमारे लिखे गए इस लेख में ना सिर्फ कबीर के दोहे और साखियां पढ़ने को मिलेंगे बल्कि उनकी संपूर्ण व्याख्या भी प्राप्त होगी।

----------X----------

बोली हमरी पूरब की, हमै लखौ नहि कोय।

हमको तो सोई लखौ, धूर पूरब का होय।'

कबीर की रचनाएँ सधुक्कड़ी भाषा में रचे गये है ये रचनाएँ गेय हैं जो स्वर, तालबद्ध कर गाये जाते हैं। कबीर की भाषा के सम्बन्ध में मूल बात यह है कि शब्द किसी भी बोली या भाषा के हो, जो उनके भावों एवं अनुभूतियों को स्पष्ट करें उसका प्रयोग वे निडरता से करते हैं। भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्द उन्होंने सत्संग एवं देशाटन से प्राप्त किया था, जो उनकी वाणियों में घुलमिल गये थे।

भोजपुरी का इतिहास लगभग 7वीं सदी से शुरु माना जाता है। भोजपुरी भाषा तथा साहित्य के उद्भव एवं विकास का विवेचन करने वाले विद्वान आचार्यों ने संत कबीर से लेकर तेग अली तक और आधुनिक काल में भिखारी ठाकुर तथा उनके परवर्ती रचनाओं की सूची प्रायः गिनाई है। भोजपुरी भाषा और साथ ही इसकी संस्कृति की प्राण शक्ति इसकी वाचिक परम्परा में शताब्दियों से गूँज रहे।

भोजपुरी, बिहारी, हिन्दी की बोली है जो मागधी अपभ्रंश से निर्मित है। यह मुख्य रूप से पश्चिम बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तरी झारखंड में बोली जाती है। भोजपुरी एक विस्तृत भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन ने मगध श्रेणी की भाषाओं को 'बिहारी' नाम से अभिहित किया। "बिहारी से ग्रियर्सन का उस भाषा से तात्पर्य है जिसकी मगही, मैथिली तथा भोजपुरी तीन बोलियां है।"

भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र बहुत विस्तृत और व्यापक है। उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में मध्य प्रांत की सरगुणा रियासत तक इसका विस्तार है। वर्तमान में भोजपुरी सिर्फ भोजपुर तक न रहकर शाहाबाद, सारन, आरा, छपरा, गोपालगंज, चंपारन, राँची का कुछ हिस्सा एवं मुजफ्फरपुर का उत्तर, पश्चिम कोना, उत्तर प्रदेश के चंदौली, गोरखपुर, आजमगढ़, बस्ती, मऊ, देवरिया, कुशीनगर आदि जनपदों तक भोजपुरी बोली जाती है।

भारत वर्ष की जिस सामासिक संस्कृति की हम कल्पना करते हैं, उसके मान मूल्यों की सबसे मुखर एवं प्रखर अभिव्यक्ति का माध्यम भोजपुरी है। इसकी विशिष्टता यह है कि जो भी निकट आया उसे इसने आत्मीयता के साथ अपना बना लिया। भोजपुरी किसी एक की नहीं सबकी है। वह संतों की सधुक्कड़ी है तथा संतों की ही तरह अक्खड़ और फक्फड़ भी है।

सन्त कबीर के जन्म दिवस को विश्व भोजपुरी दिवस के रूप में मनाया जाता है। कबीर के जन्म क्षेत्र की बोली भोजपुरी है। यह अलग बात है कि कबीर की वाणियों में भोजपुरी, अवधी, ब्रज, राजधानी, पंजाबी इत्यादि भाषाओं का योग है इसलिए इनकी भाषा में सधुक्कड़ी कहा जाता है। कबीर दास ने स्वयं कहा है कि-

भोजपुरी अंचल में कबीर गायन की एक सुदीर्घ परम्परा है। यह परम्परा नगरों, गाँवों, मजदूरों, किसानों, घुमक्कड़ों, पीर-फकीर, साधु-संतों इत्यादि में बहुत ही गहरी पैठ है, जो

www.ignited.in

मौखिक रूप में पीढ़ी-पीढ़ी चली आ रही है। भोजपुरी अंचल में भी कबीर के छाप वाले पद गाये जाते हैं।

कबीर आज भी घरों-परिवारों में तुलसी, मीरा जैसे मौजूद हैं और जन मानस को जागरूक करते हैं और ईश्वर भक्ति में मग्न होकर कबीर के पदों को गाते हैं। उदाहरण -

मैं अपने प्रभु को रिझाऊँ

गगाँ जाऊँ न जमुना जाऊँ

ना कोई तीरथ जाऊँ रे

सारा तीरथ घट ही के भीतरवा में

रे मन अपने प्रभु को रिझाऊँ

औषधि खाऊं न बूटी खाऊं, ना कोई वैद्य बोलाऊं रे।

पूरन ब्रह्म वैद्य अविनासी, वा से नबज दिखाऊं।

रे मन अपने प्रभु को रिझाऊं।

कबीर के उन्हीं पदों को ज्यादा गाया जाता है जिनमें ईश्वर भक्ति और नैतिकता होती है। चूंकि कबीर का जन्म काशी में हुआ था इसलिए यहाँ के जुलाहों, बुनकरों में कबीर का गहरा प्रभाव है ये लोग श्रम करते हुए कबीर को गाकर आनन्दित होते है।

झीनी झीनी बीनी चदरिया।

काहै के ताना काहे के भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया।

इंगला, पिंगला ताना भरनी, सुसमन तार से बीनी चदरिया।

भोजपुरी अंचल के गाँवों में चौपालों पर बैठ कर गाने वाली मण्डलियाँ और गाँव के लोग, कबीर के भजनों को गाते है जहाँ हारमोनियम, ढफली या खजड़ी की धुन पर अपनी थकान भूलकर आत्मा और मन की शान्ति पाते हैं। इनके भजनों में संसार की नश्वरता, क्षणिकता के ही उस परम सुख का भी एहसास देती है।

नैहरबा हमका ना भावे।

सांई की नगरी अतिसुन्दर जहँ कोई जाये ना पावे

चांद सूरज जहां पवन न पानी को संदेश पहुचावें।

दरस सांई को सुनावे।

आगे चलो पथ नाही सूझत पाछे दोष लगावे

केहि विधि ससुरे जाऊँ सजनी बिरहा जोर जनावे

विषय रस नाच नचावे।

इस प्रकार कबीर साहब का एक और भजन खूब गाया जाता है, जिसमें आत्मा कहती है मैंने अपने मैके में ही अपनी शरीर रूपी चुनरी में मोह, माया, विषय, विकार रूपी दाग लगा लिया है। उस रंगरेज की तो कोई बात मुझको मालूम ही नहीं जिसने इसे बनाया है और न ही वह धोबी मिल रहा जो इसे धोकर सफेद करे। आगे कबीर कहते हैं कि बिना सतगुरु के इस चुनरी का दाग नहीं छूटेगा अर्थात् जिस अज्ञानता के कारण मनुष्य भटक कर अनेक विसंगतियों में फँस गया है। उस अज्ञानता को केवल सच्चा गुरु ही दूर कर सकता है-

"नैहर में दाग लगा आई चुनरी।

ऊ रंगरेजवा मरमो न जाने,

नहि मिले धोबिया कवन करे उजरी।।

कहे कबीर सुनो भाई साधो,

बिन सतगुरु कबहूँ नहीं सुधरी।।"

भोजपुरी लोक में कबीर घुमक्कड़ों तथा साधु, संतो के बीच भी दिखाई देते हैं। हाथों में सारंगी तथा एकतारा या डफ लिए कबीर के पदों को गाते-बजाते गाँव-गाँव, द्वार-द्वार, घूमते-फिरते हैं:

"मना रंगाएँ, रंगाये जोगी कपड़ा।

आसन मारि जोगी मंदिरा में बैठे,

नाम छोड़ जोगी पूजन लागे पथरा।

कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढाले,

दाढ़ी बढ़ाय जोगी हो गए बकरा।

कहत कबीर सुनो भाई साधो,

जम दरवाजे पे जाएगा पकड़ा।"

कबीर मठों में कबीर पंथियों के यहाँ कबीर गायन की एक विशाल परंपरा दिखाई देती है। कबीरपंथी समूह में बैठकर या टोलियों में कबीर के पदों को बड़ी ही तन्मयता के साथ गाते

www.ignited.in

हैं। ये लोग कबीर के जिन पदों को गाते हैं वे मुख्यतः उनकी शाखा में संकलित पदों का भी ये लोग गायन करते हैं।

अब समय के परिवर्तन के साथ हिंदी में भी कबीर की छाप वाले पदों का ये लोग गायन करते हैं।

"मोरा हीरा हेराय गइल किचड़े में।

कोई खोजे पूरब कोई खोजे पश्चिम

कोई खोजे पानी पथरे मे।।

सुर नर मुनि अरू पीर औलिया,

सब भूलल वाटै नखरे में।

दास कबीर ये हीरा को परखौ,

बांधि लिहले जतन से अंचरे में।"

इसके अलावा कुछ ऐसे भी कबीरपंथी संत गायक हैं, जो कबीर मठों में रहते हुए आश्रम की परंपराओं का पूरा निर्वाह करते हुए अपने गायन की प्रस्तुति देश-विदेशों में भी देते हैं। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन इत्यादि में कबीर-गायन की प्रस्तुति देकर कबीर की गायन परंपरा को जीवंत बनाए रखो हुए हैं। उन गायकों में संत राम प्रसाद दास 'बालयोगी', सुकृतदास, संत रामचंदर दास इत्यादि प्रमुख कबीरपंथी संत गायक हैं।

सफेद कुर्ता और धोती पहने, कंधो पर गमछा डाले जब ये अपनी टोली के साथ कबीर के भजनों की प्रस्तुति देते हैं तो पूरा वातावरण कबीरमय हो जाता है। ये संत गायक कबीर के पदों को गाते-गाते पूरी तरह से लीन हो जाते हैं। इनके गायन में तन्मयता, समर्पण, सादगी इत्यादि अनायास ही दिखाई देती है। ये संत गायक कबीर की छाप वाले हिंदी भजनों की भी प्रस्तुति बड़े ही मनोयोग से करते हैं:

बने जो कुछ धरम कर ले, यही एक साथ जाएगा।

गया अवसर ना तेरे ये हरगिज हाथ आएगा।

कहत कबीर समुझाई, इ कहना मानजा भाई

नहीं तो अपनी ठकुराई, कृपा सारी गवाएगा।

इन गायकों के पदों में प्रभु भक्ति, गुरू महिमा, सामाजिकता, माया का निषेध, वाह्य आडंबर का विरोध, सत्संग महिमा इत्यादि की प्रधानता रहती है। इसी प्रकार संत राम प्रसाद सहाय 'बालयोगी' खजड़ी बजाते कबीर का एक पद गाते हुए कहते हैं कि संसार में क्या रहना, यह तो वीराना है, नश्वर है;

"रहना नहीं देश बिराना है

यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े घुल जाना है।

यह संसार काँट की बाड़ी, उलक्ष पुलझ मरि जाना है।

यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है।"

भारतीय हिंदू समाज में अनेक तीज त्यौहार एवं पर्व इत्यादि मनाए जाते हैं। जिनमें होली, दिवाली, विजयादशमी, नवरात्रि इत्यादि प्रमुख है। होली का त्यौहार बड़े ही उमंग एवं जोश के साथ मनाया जाता है। तरह-तरह के गीत इस त्यौहार में होते हैं। होली में भोजपुरी क्षेत्रों में कबीरा बड़े ही उमंग के साथ गाया जाता है जिसमें कबीर की उलटवासी साधना की विभिन्न स्थितियों का गूढ़ार्थ प्रकट होता है-

"कबीरा सा रा रा रा रा

पहिले दही जमाइये पीछे दुहिये गाय,

बछवा वाके पेट में गोरस हाट विकाय।

कबीरा सा रा रा रा रा।"

इसके अलावा कबीरा गाने का एक और तरीका है, जिसमें निर्गुणियों के प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है, जिसे 'जोगीड़ा' भी कहा जाता है। इसमें गोरख पंथियों और कबीर पंथियों में उलटवासियों के माध्यम से शास्त्रार्थ होता था। गोरख और कबीर के प्रश्नोत्तर से संबंधित अनेक जोगीड़े लोक में प्रचलित है।

जैसे-

गोरख का प्रश्न-

"कौन तुम्हारी नगरी है, कौन तुम्हारा देस।

कौन तुम्हारा है दुलेचा कौन गुरु दीना उपदेस।

कबीर का उत्तर-

"काया मेरी नगरी और पानी मेरा देस।

www.ignited.in

धरती हमारा है दुलेचा, गुरु गोविंद दीना उपदेस।।''

ऐसे ही अनेक 'कबीरा' और 'जोगीड़ा' भोजपुरी समाज में बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ आज भी गाए जाते हैं।

भोजपुरी लोक गायन की विधाओं में होली, चैती, पूर्वी धमार, निर्गुण विदेशिया, छपरहिया, कजरी, जतसार इत्यादि प्रमुख है। निर्गुण गीतों पर कबीर मत का प्रभाव है। अनेक भोजपुरी लोक गायकों ने कबीर के निर्गुण पदों को खूब गाया है। भरत शर्मा, मदन राय, विष्णु ओझा इत्यादि प्रमुख गायक आज भी कबीर के भजनों का गायन मंचों, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा आडियो-विडियों कैसेट के माध्यम से कर रहे हैं। निर्गुण में निराकार, निर्विकार ब्रह्म की परिकल्पना की गई है। निर्गुण गीतों के बारे में डॉ. शान्ति जैन ने लिखा है-"निर्गुण गीतों में निराकार ब्रह्म की कल्पना की गई है। काया की क्षणभंगुरता, संसार का मिथ्यापन, माया का व्यामोह, मृत्यु की अनिवार्यता और जीवन की असहाय अवस्था आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति इन गीतों में होती है। इनमें प्रतीकों का माध्यम लिया जाता है। संसार की नैहर, ईश्वर के देश को ससुराल, आत्मा को प्रियतमा और परमात्मा को प्रियतम का प्रतीक माना जाता है। प्राणों को पक्षी का प्रतीक माना गया है।"

कबीर के भजनों को भोजपुरिया लोक गायक निर्गुणिया भजन के रूप में गाते हैं। भोजपुरी लोक में कबीर का एक भजन बहुत ही प्रचलित है, जिसमें 'आत्मा' को 'भँवरवा' के प्रतीक से संबोधित किया है, जिसे मदन राय ने बड़ी तन्मयता से गाया है-

भँवरवा के तोहरा संग जाई,

आवे के बेरिया सब केहू जाने,

दुवरा पे बाजेला बधाई,

जाये के बेरियाँ केहू ना जाने,

हंस अकेले चलि जाई

हाथ पकड़ के मेहर रोवे बाँह पकड़ के भाई

बीच अंगनवाँ माता जी रोवे बबुआ के होखोला विदाई,

कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु शरण में जाई

जो यह पद के अर्थ बतइहें, जगत पार होई जाई।

इसके अलावा ये लोक गायक भोजपुरी विधाओं के कुछ पारंपरिक लोक धुनों में भी कबीर के पदों को गाते हैं। जिसमें छपरहिया, पूर्वी, चैती इत्यादि की प्रमुख लोक धुने हैं। छपरहिया लोक धुन में ऊँचे सुर के गीत का प्रारंभ किया जाता है तथा पद के बीच-बीच में 'अरे सखियाँ रे' का टेक लिया जाता है। इसी प्रकार का एक गीत मदन राय ने गाया है:

"एकत मो बाली भोली, दुसरे पिया के रे चोरी

अरे सखिया रे तीसरे विरह में दहियाँ मातलि हो राम

फूल लो दे गइली बारी, सारी मोरी अटकल डाढ़ी

अरे सखिया रे तीसरे में साड़ियों को न उतारत हो राम"

इसी प्रकार चैती लोकधुन में भी कबीर के कई पद गाये गए हैं। चैती, चैत के महीने में गायी जाती है। जिसे गाते समय 'हो रामा' शब्द की पुनरावृत्ति कई बार होती है। संत कबीर की एक चैती में आत्मा रूपी दुलहिन श्रृंगार कर अपने परमात्मा रूपी प्रियतम से मिलने जाती है।

"पिया से मिलन हम जाइब हो रामा

अतलस लहंगा कुसुम रंग सारी

पहिर-पहिर गुन गाएब हो रामा।"

भोजपुरी अंचल में कबीर की उपस्थिति निरंतर विद्यमान है। कबीर गाँवों, नगरों, घरों, कबीरपंथी आश्रमों, साधु-संतों घुमक्कड़ों, गायकों इत्यादि के यहाँ अपने ढंग में गाये-बजाये जाते हैं।

भोजपुरी क्षेत्रों में कबीर गायन में ढोलक, हारमोनियम, खजड़ी, झाल, तंबूरा, दंडताल इत्यादि वाद्य यंत्रों का प्रयोग ज्यादा किया जाता है। दंड ताल एक प्रमुख वाद्य यंत्र है जिसका प्रयोग विरले लोग ही करते हैं। यह एक लोहे के छड़ का होता है, जिसके नीचे एक छेद होता है, जिसमें पैर के अँगूठे को फँसाकर दाहिने हाथ से उसके ऊपरी भाग को पकड़कर बजाया जाता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें कोई तार नहीं होता है। आज के बदलते परिवेश में ढोल की जगह नाल तथा खजड़ी की जगह चांग ने ले लिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भोजपुरी भाषा और साहित्य, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ0 31

www.ignited.in

2. आधुनिक लोक गायन में कबीर, शोध प्रबन्ध, पृ0 49

3. भोजपुरी मंगल गीत भूमिका, पृ0 2

4. लोक में कबीर, सम्पादक-कपिल तिवारी, पृ0 573

5. लोक में कबीर, सम्पादक-कपिल तिवारी, पृ0 571

6. कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 260

7. लोक में कबीर, संपा0-कपिल तिवारी, पृ0 627

8. भोजपुरी भाषा और साहित्य: डॉ. उदयनारायण तिवारी, पृ0 40

9. कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 235

10. लोक में कबीर: (सं) कपिल तिवारी, पृ0 589

11. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, डॉ. शान्ति जैन, पृ0 609

12. लोक गीतों के संदर्भ और आयाम: डॉ. शान्ति जैन, पृ0 609

13. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम: जैन, डॉ. शान्ति, पृ0 312

Corresponding Author

Dr. Asha Tiwari Ojha*

Associate Professor, Department of Hindi, Sunderwati Mahila College, Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bihar